मौर्यकाल में कला का विकास

गुहा स्थापत्य

1. अशोक के समय में पर्वतों को काटकर गुहा निर्माण की कला का विकास हुआ। बिहार में गया से लगभग 31 कि०मी० उत्तर में पहाड़ियों को काटकर सात प्रस्तर गुहा आवासों का निर्माण किया गया। इन गुहा-आवासों में चार बाराबर पहाड़ियों में तथा तीन नागार्जुन पहाड़ियों में स्थित हैं, जिनका अशोक एवं उसके पौत्र दशरथ ने निर्माण कराया था। ये गुहाएं पत्थरों को काटकर निर्मित स्थापत्य का प्राचीनतम निदर्शन हैं। इनमें से कुछ गुहा आवासों को अशोक एवं उसके पुत्र दशरथ ने आजीविकों को दान में प्रदान किया था। बाराबर की जिन तीन गुहाओं में अशोक के गुहा अभिलेख प्राप्त हुए हैं वे हैं - कर्ण की चौपड़ गुफा, सुदामा गुफा एवं लोमस ऋषि गुफा।

2. सुदामा की गुफा में दो कोष्ठ हैं। इनकी छत ढोलाकार है। दोनों कोष्ठों की दीवारां तथा छतों पर शीशे के समान चमकीली पॉलिश है। दशरथ के समय बनी गुफाओं में लोमस ऋषि नाम की गुफा उल्लेखनीय है। यह बराबर-समूह की सबसे प्रसिद्ध गुफा है जिसका वास्तु-विन्यास सुदामा की गुफा के ही समान है। अंतर केवल यही है कि इसका आंतरिक कोष्ठ वर्गाकार न होकर अंडाकार है। इसका निर्माण-कार्य बड़ी सावधानी से हुआ है तथा यह कालांतर के चैत्यगृहों के अग्रभाग को सुसज्जित करने वाले अलंकरणों की वृहद् योजना के प्रारंभ का प्रतिनिधित्व करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं इस गुफा का प्रवेशद्वार सर्वोत्त है। दोनों पंखां पर तिरछे खड़े दो स्तंभ हैं जिनके ऊपर गोल मेहराव बने हुए हैं। इनके बीचों-बीच एक स्तूप तथा दोनों किनारों पर हाथियों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं।

3. बराबर पहाड़ी की चौथी गुफा को **विश्व झोंपड़ी** कहा जाता है। इसका निर्माण भी अशोक के शासनकाल के बारहवें वर्ष हुआ था। इसमें दो कोष्ठ हैं। इनकी दीवारों पर चमकीली पॉलिश मिलती है।

4. नागार्जुनी समूह में **गोपिका गुफा** महत्वपूर्ण है जिसे दशरथ ने अपने अभिषेक वर्ष में बनवाया था। यह सुरंग के आकार की है जिसके दोनों सिरों पर गोल-मंडप बने हैं। इनमें एक गर्भगृह तथा दूसरा मुखमंडप है। इसमें मौर्यकालीन गुहा-स्थापत्य की सभी विशेषताएं प्राप्त होती हैं। इस प्रकार मौर्य युग में गुहा-स्थापत्य का पूर्ण विकास हुआ।

स्तंभ या लाट

1. मौर्यकालीन कला के सर्वोत्कृष्ट नमूने एक ही प्रस्तर खंड में निर्मित (एकाश्म) स्तंभ या लाट हैं, जिनके शीर्षों पर भव्य पशु मूर्तियां प्रतिष्ठापित हैं। ये स्तंभ अपनी विस्मयकारी पॉलिश एवं सजीव पशु आकृतियों के कारण कला का एक उत्कृष्ट निदर्शन हैं। ये स्तंभ दो प्रकार के पत्थरों से निर्मित किए गए हैं। कुछ को तो मथुरा क्षेत्र से प्राप्त चित्तीदार लाल एवं श्वेत बलुए पत्थर से निर्मित किया गया है जबकि अधिकांश अन्य स्तंभों को चुनार से खोदकर निकाले गए पीतवर्णी बारीक दानेदार कठोर भूरे बलुए पत्थर से निर्मित किया गया है।

2. स्तंभ की संपूर्ण लाट एक ही पत्थर से बनी है। ये स्तंभ गोलाकार और नीचे से ऊपर तक चढ़ाव-उतारदार हैं। इन स्तंभों तथा इनके शीर्ष पर वज्रलेप किया गया है जो अत्यंत सुंदर, चमकदार और चिकना है। लाटों पर प्रतिष्ठापित शीर्ष भाग को पृथक से बनाकर स्थापित किया गया है।

Scanned with CamScanner

3. स्तंभ के तीन भाग किए जा सके हैं। पहला भाग ध्वज या स्तंभ का तना जो बिल्कुल सादा परंतु चिकना और चमकीला है। दूसरा भाग अंड या गला जो गोला बना हुआ है और धार्मिक प्रतीकों - चक्र, पशु-पक्षी, लता, पुष्प आदिसे बिल्कुल और अलंकृत है। सबसे ऊपर स्तंभ का शीर्ष है जिसमें सिंह, हस्ति, अश्व, वृषभ आदि की मूर्तियां एक या कई साथ बनी हैं।

4. स्तंभों पर पशुओं की आकृतियां और कमल का फूल बना हुआ है। शीर्ष के ऊपर निर्मित फलक पर विभिन्न पशुओं, पक्षियों एवं धर्मचक्र को उत्कीर्णित किया गया है। इन स्तंभों का भव्य सौंदर्य मुख्यतया पशु मूर्तियों के कारण ही है। इन स्तंभों के शीर्ष पर उत्कीर्णित पशु इस प्रकार हैं –

(क) लौरिया-नन्दगढ़ स्तंभ के शीर्ष पर एक सिंह खड़ा है तथा इस शीर्ष के नीचे उपकंठ में ब्रह्मगिरि के हंसों या राजहंसों को मोती चुगते दिखाया गया है। कोल्हुआ (बारावर) एवं रामपुरवा के अशोक-कालीन स्तंभों पर एक सिंह की मूर्ति सुशोभित है।

(ख) सांची एवं सारनाथ के स्तंभों के शीर्षों पर चार सिंह एक-दूसरे के पीछे पीठ किए हुए बैठे हैं।

(ग) सांकास्य या संकिसा (फर्रुखाबाद जनपद, उत्तर प्रदेश) के शीर्ष पर एक विशाल हाथी की मूर्ति प्रतिष्ठापित की गई थी।

(घ) रामपुरवा के स्तभ पर एक वृष की आकृति मिलती है।

(ड) बी०ए० स्मिथ के अनुसार लौरिया-अरराज स्तंभ के शीर्ष पर एक गरुड़ की आकृति है लेकिन अन्य बहुत से इतिहासकार इसे एक सिंह की आकृति मानते हैं।

स्तूप स्थापत्य

1. स्तूप का प्रारंभिक रूप अर्ध-गोलाकार मिलता है। इसमें एक चबूतरे **(मेधि)** के ऊपर उल्टे कटोरे की आकृति का एक थूहा बनाया जाता है। जिसे **अंड** कहते हैं। स्तूप की चोटी सिरे पर चपटी होती थी जिसे ऊपर धातु-पात्र रखा जाता था। इसे **हर्मिका** कहते हैं यह स्तूप का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग होता था। हर्मिका का अर्थदेवसदन अथवा देवताओं का निवास-स्थान होता है। हर्मिका के बीच में एक यष्टि अथवा दंड लगाई जाती थी। यष्टि के ऊपरी सिरे पर तीन **छत्र** लगाए जाते थे। स्तूप को चारों ओर से बाड़ अथवा दीवाल से घेर दिया जाता था। इसे **वेदिका** कहते हैं। स्तूप तथा वेदिका के बीच परिक्रमा करने के लिए जो खाली स्थान होता उसे **प्रदक्षिणापथ** कहा जाता था। कालांतर में वेदिका के चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार बनाए गए जो **तोरण** कहलाते हैं।

2. बौद्ध परंपरा अशोक को 84 हजार स्तूपों के निर्माण का श्रेय प्रदान करती हैं सातवीं शताब्दी ईस्वी के चीनी यात्री हुएनसांग ने तक्षशिला, श्रीनगर, थानेश्वर, मथुरा, कन्नौज, प्रयास, कौशाम्बी, श्रावस्ती, वाराणसी, सारनाथ, वैशाली, गया, कपिलवस्तु आदि स्थानों में इन स्तूपों को देखा था। परंतु दुर्भाग्यवश आज ये सभी नष्ट हो चुके हैं।

3. नेपाल की सीमा पर पिपरहवा के खंडहरों में एक स्तूप मिला है जो पत्थर के एक विशाल कक्ष के चारों ओर तथा उसकी ऊपर ईंटों के एक ठोस गुंवद के रूप में बनाया गया था।

4. कला की दृष्टि से सांची का स्तूप सबसे अधिक प्रसिद्ध है। महास्तूप का निर्माण अशोक के शासनकाल में हुआ था। यह ईंटों का बना था जिसके चारों ओर लकड़ी की बाढ़ लगाई गई थी। इसके अतिरिक्त सारनाथ तथा तक्षशिला स्थित **धर्मराजिका स्तूप** का निर्माण भी मूलतः अशोक के समय में ही करवाया गया था जिन्हें परवर्ती शासकों ने परिवर्धित करवाया।

Scanned with CamScanner

मूर्तिकला

1. मौर्ययुगीन मूर्तिकला के सर्वोत्तम नमूने अशोक स्तंभों को मंडित करने वाली विभिन्न पशुओं की आकृतियों में दर्शनीय हैं। उड़ीसा की धौली चट्टान को काटकर बनाई गई हाथी की आकृति पाषाण मूर्तिकला की उत्कृष्टता को सूचित करती है। हाथी अत्यंत विशाल आकार का है जिसके अग्रभाग को उकेरा गया है। उसके सूंड, पैर आदि की गढ़ अत्यंत स्वाभाविक है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी सूंड में कोई वस्तु लपेट कर उठा रहा है। हाथी चट्टान से बाहर निकलते हुए जान पड़ता है। इसी प्रकार कालसी (देहरादून) की चट्टान पर एक हाथी की आकृति खुदी हुई मिलती है। हाथी के पैरों के बीचों-बीच मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में गजतमे (गजोत्तमः) अर्थात् सर्वोत्तम हाथी खुदा हुआ है। हाथी की दोनों ही आकृतियां उत्कीर्ण (रिलीफ) मूर्तिकला का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

2. पाटलिपुत्र आदि की खुदाई से मौर्य युग की अनेक मूर्तियां भी उपलब्ध हुई हैं। ये सब बलुए पत्थर से बनी हैं और इन पर चमकदार पॉलिश की गई है। पॉलिश की कला मौर्य युग की विशेष्ता थी, और इसी आधार पर इन्हें इस काल का माना जाता है। इनमें से प्रसिद्ध चामरग्राहिणी यक्षी की मूर्ति है, जो 6 फीट 9 इंच ऊंची है। यह दीदारगंज, पटना से मिली है। मौर्य युग की कला का यह अत्यंत उत्कृष्ट नमूना है। यक्षी की मुखमंडल अत्यंत सुंदर है और उसकी मुद्रा दर्शनीय है। संभवतः इसका प्रयोग मौर्य राज प्रसाद में सज्जा के लिए किया गया था।

3. पाटलिपुत्र के भग्नावशेषों में जैन तीर्थंकरों की अनेक खड़ी मूर्तियां भी मिली हैं जो पॉलिश-युक्त हैं। इनमेंसे एक मूर्ति कायोत्सर्ग मुद्रा में है, जिसकी पॉलिश पूर्णतया सुरक्षित दशा में है। यह लोहानीपुर (पटना) से उपलब्ध हुई है। दुर्भाग्यवश ये मूर्तियां खंडित दशा में हैं और इनके केवल धड़ भाग ही उपलब्ध हो सके हैं। कुम्हार की खुदाई में एक मूर्ति का सिर मिला है, जिस पर पगड़ी बनी हुई है और जिसके कानों से लटके हुए कर्णाभूषण बनाए गए हैं। इसी प्रकार की अनेक अन्य मूर्तियों के खंड पटना की खुदाई में मिले हैं, जिन पर हार, मेखला आदि आभूषण खचित हैं। सारनाथ से दो पुरुष-मूर्तियों के मस्तकर, एक सिरे के तिपय खंड और एक पक्षी मूर्ति भी खंडित रूप में प्राप्त हुई है। पतिर को तराशकर मूत्रियां बनाने की कला मौर्य युग में अत्यंत विकसित थी।

4. मथुरा के निकट परखम में मनुष्य की एक विशाल प्रतिमा मिली, जिस पर अशोककालीन ब्राह्मी लिपि में लेख भी उत्कीर्ण है। परखम का यक्ष, बेसनगर की यक्षिणी और दीदारगंज की स्त्री की आकृतियां बहुत साधारण-सी हैं। उनमें आकार को बड़ा बनाने का विशेष प्रयत्न किया गया है। सौंदर्य की कमी है। पत्थर की छंटाई भी साफ नहीं है। सारनाथ की वेष्टणी के पत्थर के टुकड़ों में भी विशेष सौंदर्य नहीं है। इसे बावजूद यह मानना पड़ता है कि मौर्यकाल की मूर्तियों में भावों का अंकन बड़े सुंदर ढंग से किया गया है।

मृण्मूर्तियां

मौर्य युग की बहुत-सी मृण्मूर्तियां भी उपलब्ध हुई हैं। ये पटना, अहिच्छत्र, मथुरा, कौशाम्बी, मसोन (गाजीपुर) आदि के भग्नावेशेषों में बहुत बड़ी संख्या में पाई गई हैं। ये जहां कला की दृष्टि से अत्यंत सुंदर हैं, वहां उस युग की वेशभूषा तथा सभ्यता की जानकारी के लिए भी इनका उपयोग है।

Scanned with CamScanner